Dr Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A Semester-I Philosophy CC-01
Indian Epistemology & Logic

"Definition, Nature of Cognition" 1

ज्ञान एक सरल प्रत्यय है जिसकी यद्यपि व्याख्या संभव है किन्तु परिभाषा नहीं। इस परम्परा में व्यवहारिक ज्ञान ही ज्ञानमीमांसीय विवेचना की विषय-वस्तु है। व्यावहारिक ज्ञान को त्रिपुटि ज्ञान के रूप में समझा जा सकता है। यह "त्रिपुटि ज्ञान" यथार्थ अथवा अयथार्थ हो सकता है। यथार्थ ज्ञान को प्रमा तथा अयथार्थ ज्ञान को 'अप्रमा' कहा जाता है।

भारतीय ज्ञानमीमांसा 'तत्वमीमांसा का साधन' है अतएव प्रत्येक भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय ने अपनी तत्वमीमांसा से अविच्छिन्न होने के कारण भारतीय दार्शनिक ज्ञान का विश्लेषण तत्वमीमांसा से परे मात्र एक भाषायी तथ्य के रूप में नहीं करते। अतएव यहाँ सामान्यतः 'ज्ञान' को 'विषय के प्रकाशक' के रूप में ही स्वीकार किया गया है। शब्दान्तर से ज्ञान के विषय में भारतीय दार्शनिकों की एक सामान्य धारणा यह है कि ज्ञान वह है जो विषय को प्रकाशित करता है। विषय की यह प्रकाशना ज्ञाता की चेतना में होती है। इसी अर्थ में कहा गया कि विषय जिस रूप में ज्ञाता की चेतना में उपस्थित होता है विषय का वह रूप, विषय की उपस्थिति की वह क्रिया और स्वयं ज्ञाता ही मिलकर 'ज्ञान' अथवा 'बोध' की सर्जना करते हैं।

ही रूप में नहीं 'त्रिपुटी ज्ञान'। अर्थात ज्ञाता ज्ञेय और ज्ञान का साधन अथवा 'प्रमाण', अथवा इनमें ज्ञान के सम्मीलित रूप 'ज्ञान' की धारणा का जन्म होता है।

इस त्रिपुटी ज्ञान के विषय में भी यथार्थवादियों तथा प्रत्ययवादियों में मतभेद है। यथार्थवादी ज्ञान के इन तीन संघटक तत्वों - ज्ञाता ज्ञेय और ज्ञान अथवा प्रमाण को परस्पर एक दूसरे से स्वतंत्र मानते हैं जबकि प्रत्ययवादी ज्ञान के इन तीन संघटक तत्वों के बीच के भेद को पारमार्थिक अथवा चरम स्वीकार नहीं करते। प्रत्ययवादी मत के अनुसार यदि ज्ञाता, ज्ञेय और प्रमाण को परस्पर स्वतंत्र माने तो इससे बाह्य संबंधवाद की समस्या उत्पन्न होगी जिससे अनन्तता दोष उत्पन्न होगा। अतएव प्रत्ययवादी, त्रिपुटी ज्ञान को व्यावहारिक दृष्टि से स्वीकार करते हुए भी पारमार्थिक रूप से इसे अस्वीकार करते हैं।

ज्ञान के विषय का प्रकाशन यथार्थ भी हो सकता है और अयथार्थ भी, जैसे जब वस्तु रज्जु का ज्ञान ज्ञाता को रज्जु रूप में होता है तो विषय का यह प्रकाशन यथार्थ है। जब वस्तु रज्जु का ज्ञान ज्ञाता को सर्प के रूप में होता है तो विषय का यह प्रकाशन अयथार्थ है। इस रूप में ज्ञान यथार्थ और अयथार्थ दोनों ही हो सकता है।

भारतीय परम्परा में

यथार्थ और अयथार्थ ज्ञान के इस भेद को स्वीकार करते हुए यथार्थ ज्ञान को 'प्रमा' और अयथार्थ ज्ञान को 'अप्रमा' की संज्ञा दी गई है। विविध भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों में प्रमा अप्रमा के भेद को निरूपित करने के लिए विस्तृत विवेचनाएँ की गयी हैं।

ज्ञान के संदर्भ में प्रश्न यह उठता है कि ज्ञान किस कोटि की सत्ता है। भारतीय परम्परा में ज्ञान की व्याख्या चार रूपों में की गई है —

1. ज्ञान द्रव्य है।
2. ज्ञान गुण है।
3. ज्ञान क्रिया है।
4. शून्यतावादी मत।

(1) ज्ञान द्रव्य है — इस मत के समर्थक वेदान्ती और सांख्य हैं। इस मत के अनुसार 'आत्मा' अथवा 'पुरुष' ज्ञान स्वरूप है। ज्ञान को 'द्रव्य' कहने का अर्थ यह नहीं है कि ज्ञान आत्मा, पुरुष अथवा ब्रह्म से भिन्न कोई तत्व है वरन इस मत के अनुसार आत्मा, पुरुष अथवा ब्रह्म स्वयं ज्ञान स्वरूप है। तात्विक दृष्टि से ब्रह्म और ज्ञान में अभेद है। जो ब्रह्म है वही ज्ञान है जो ज्ञान है वही ब्रह्म है। यह ज्ञान सबको धारण करता है किन्तु इसका कोई अन्य अधिष्ठान नहीं। यह ज्ञान सबको प्रकाशित करता है। इस दृष्टि से ज्ञान स्वतः प्रमाण्य और स्वतः प्रकाश्य है।

इस संदर्भ में योगाचार बौद्धों का मत उल्लेखनीय है जो ज्ञान का 'द्रव्य' रूप तो नहीं स्वीकार करते किन्तु योगाचार मत में भी विज्ञान अथवा विज्ञप्तिमात्र ही सत्य है और विज्ञान ही एकमात्र सत्ता है। योगाचार मत की सत्ता विषयक अवधारणा 'सत्ता' विषयक सामान्य अवधारणा से भिन्न है। योगाचार मत ज्ञान को गुण अथवा कर्म भी नहीं कहता।

(2.) ज्ञान गुण है — भारतीय दार्शनिकों का एक दूसरा वर्ग ज्ञान को 'गुण' के रूप में स्वीकार करता है। ज्ञान को 'गुण' कहनेवाले दार्शनिकों को भी दो वर्गों में रखा जा सकता है —

1. प्रथम वर्ग उन विद्वानों का है जो चेतना अथवा ज्ञान को द्रव्य का आगन्तुक लक्षण कहते हैं।

2. तथा दूसरा वर्ग इन दार्शनिकों का है जो ज्ञान अथवा चेतना को द्रव्य का स्वरूप लक्षण कहते हैं।

इनमें से प्रथम वर्ग में चार्वाक, न्याय, वैशेषिक तथा प्रभाकर मीमांसक आते हैं। तथा द्वितीय वर्ग में जैन तथा विशिष्टाद्वैती रामानुजाचार्य का सम्प्रदाय आता है।

चार्वाक एक भौतिकवादी मत है। इस मत के अनुसार चार भूतों से ही सभी वस्तुओं को

उत्पत्ति हुई है। चेतना चार भूतों (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु) के संयोग का उत्पाद है। चार्वाक देहात्मवादी है। इस मत के अनुसार चेतना अथवा ज्ञान भौतिक शरीर का ही गुण है। यह गुण शरीर का स्वरूप लक्षण न होकर आगन्तुक लक्षण है। चार्वाक मत के अनुसार ज्ञान का उत्पन्न आदि शब्दों का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि ज्ञान कोई शाश्वत सत्ता नहीं वरन शरीर के विशेष अंग का एक आगन्तुक गुण है।

न्याय वैशेषिक मत आत्मा को पदार्थ के रूप में स्वीकार करते हैं। वैशेषिक के मत में आत्मा द्रव्य है और ज्ञान इसका गुण। न्यायमत भी ज्ञान अथवा चेतना को पदार्थ रूपी आत्मा का गुण ही कहता है। किन्तु इस मत में ज्ञान अथवा चेतना को आत्मा का स्वरूप लक्षण न कहकर आगन्तुक गुण कहा गया है।

प्रभाकर मत में चैतन्य के अधिष्ठान के रूप में आत्मा को स्वीकार किया गया है। यह आत्मा स्वयं में चैतन्य स्वरूप नहीं है, जब विषय, इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि के साथ आत्मा का सम्पर्क होता है तभी आत्मा में ज्ञान अथवा चैतन्य रूपी गुण की उत्पत्ति होती है। सुषुप्ति, मूर्च्छा आदि की स्थितियों में चेतना का अभाव यह

यह सिद्ध करता है कि चेतना अथवा ज्ञान आत्मा का स्वरूप लक्षण न होकर आगन्तुक लक्षण है।

दूसरी तरफ जैन तथा विशिष्टाद्वैती क्रमपूर्वक यह सिद्ध करते हैं कि चैतन्य अथवा ज्ञान आत्मा का स्वरूप लक्षण है। जैन मत में जीव तथा अजीव नामक दो द्रव्य स्वीकार किए गए हैं और कहा गया है कि चैतन्य जीव द्रव्य का स्वरूप लक्षण है। इसी भाँति विशिष्टाद्वैत मत भी ब्रह्म, जीव और प्रकृति नामक तीन तत्वों को स्वीकार करता है जिनमें ब्रह्म अथवा ईश्वर निरपेक्ष द्रव्य है तथा जीव एवं प्रकृति सापेक्ष द्रव्य है। चेतना इसी जीव तत्व का स्वरूप लक्षण है।

(ड) ज्ञान क्रिया है — इस मत के समर्थक भाट्ट मीमांसक हैं। भाट्ट मीमांसा के अनुसार ज्ञान न तो द्रव्य है न तो यह गुण है। इस मत के अनुसार ज्ञान क्रिया है जिसका कर्ता आत्मा है। "मैं जानता हूँ" जैसे वाक्यों से स्पष्ट है कि ज्ञान क्रिया है। कुमारिल भट्ट ने ज्ञान को आत्मा का धर्म भी कहा है किन्तु यहाँ 'धर्म' पद का प्रयोग 'गुण' के अर्थ में न होकर 'क्रिया' के अर्थ में ही हुआ है। पार्थसारथी मिश्र ने ज्ञान को 'सकर्मक' क्रिया कहा है।

ज्ञान का विभाग ही ज्ञान का कर्म है जैसे- मैं पुस्तक को जानता हूँ, यहाँ 'मैं' कर्ता है, 'पुस्तक' कर्म तथा 'ज्ञान' क्रिया है।

(५) शून्यतावादी मत— ज्ञान के विभाग में शून्यतावादी बौद्धों का मत सर्वथा विलक्षण है। इनके अनुसार ज्ञान न तो द्रव्य है, न गुण है, न क्रिया है वरन यह शून्यता है।

शून्यतावादी बौद्धों की शून्यता विषयक अवधारणा एक विलक्षण अवधारणा है, यहाँ शून्यता का अर्थ 'अभाव' नहीं है किन्तु शून्यता को 'भाव' के अर्थों में भी व्याख्या नहीं किया जा सकता। 'शून्यता' वस्तुतः 'अनभिलाप्य' (वाणी से परे) है। अतः इसका भावमूलक व्याख्या संभव नहीं। व्यवहार की दृष्टि से बौद्ध शून्यता की निषेधात्मक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि से शून्यता-रूप ज्ञान द्रव्य गुण, कर्म संबंध आदि से परे (निषेधरूप) है।

भारतीय परम्परा में त्रिपुटिज्ञान की अवधारणा पाई जाती है। प्रमा चूंकि एक प्रकार का ज्ञान है अतएव यहाँ प्रमा का स्वरूप निरूपण भी त्रिपुटिज्ञान के रूप में किया गया है। त्रिपुटिज्ञान के रूप में प्रमा के तीन संघटक तत्व हैं— प्रमाता अर्थात प्रमा को प्राप्त करनेवाला प्रमेय अर्थात प्रमा की विषय-वस्तु और प्रमाण अर्थात

2 SATURDAY

123-243

APRIL '20

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

MAY '20

M	T	W	T	F	S	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

APPOINTMENTS / MEETINGS

8 AM प्रमा का साधन, प्रमा के साधन को प्रमाण
कहा गया है। प्रमायुक्त प्रत्येक
9 ज्ञान प्रमा है। इस प्रकार त्रिपुटिज्ञान
के रूप में प्रमा के तीन ~~संघटक~~
10 संघटक तत्व है — प्रमाता प्रमेय
और प्रमाण अथवा स्वयं प्रमा।

11

12

1 PM

2

3

3 SUNDAY